शोध प्रारूप

मुण्डारी नाट्य साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

विश्वविद्यालय मुण्डारी विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रारूप की रुपरेखा

संकाय- जनजातीय एंव क्षेत्रीय भाषा

वर्ष : 2024

शोध निर्देशक

डॉ. जुरन सिंह मानकी
सहायक प्राध्यापक, मुण्डारी विभाग
एस. एस. मेमोरियल कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

शोधार्थी

सोमा महतो
(यूजीसी) नेट/जे.आर.एफ. उत्तीर्ण
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
डी. एस. पी. एम. यू. राँची

मुण्डारी नाट्य साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
(प्रस्तावित शोध प्रारूप)

<u>प्रस्तावना</u> :-

साहित्य समाज का दर्पण होता है। मूल रूप से नाटक शब्द की उत्पत्ति नट् धातु से हुई है, जिसका अर्थ होता है उत्तम एंव सात्विक भावों का प्रदर्शन। सामान्यः नट् अभिनेता को कहा गया है। भारत में अभिनय कला और रंगमंच का वैदिक काल में ही निर्माण हो चुका था। तत्पश्चात संस्कृत रंगमंच तो अपनी उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। भरत मुनि का 'नाट्य शस्त्र' इसका प्रमाण है। प्राचीन संस्कृत काव्यशास्त्र में नाटक को दृश्य-काव्य के एक स्वरूप रूपक के उप-स्वरूप के रूप में बताया गया है, अतः नाटक एक दृश्य काव्य है। भरत मुनि के अनुसार ‘‘जिसमें आमजन का सुख-दुख समन्वित होता है तथा अंगों के द्वारा जिसे अभिनीत किया जा सके वह नाटक है।" नाटक के स्वरूप के संबंध में आचार्य विश्वनाथ ने बताया है की "नाटक का वृत ख्यात होना चाहिए। नाटक में विलास, समृद्धि आदि गुण तथा कई प्रकार के एश्वर्यो का वर्णन होना चाहिए।"

"पाणिनि नाट्य की उत्पति नट् धातु से बतलाते हैं। नट् में नृत प्राकृत रूप में अवस्थित है। नट्-नृत समानार्थी है। दोनों में अभिनय व्याप्त है। नट् में संवाद की प्रधानता एवं नृत में भाव की प्रधानता होती है।" नाट्य के समानान्तर दो और शब्द हैं नृत और नृत्य। इन दोनों शब्दों की व्युत्पति नट् से बताई गई है किन्तु अर्थ में भिन्नता है। 'नृत ताल लय आश्रित होता है। नृत्य में भाव की प्रधानता होती है। नाटक रस आश्रित होता है। नाटक साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। किसी भी प्रकार के नाटक को देखकर सभी इद्रियाँ सजग हो उठती है। दर्शक नाटक के दृश्यों को आँखों से देखता है। कानों से सुनता है। दर्शक के मन पर देखे गए दृश्य एवं सुने गए संवाद का एक साथ प्रभाव पड़ता है। दृश्यों और संवादों के आधार पर वह बुद्धि से सोचता है। कल्पना से अपने आप को पात्रों की भूमिका में रखकर आनन्द की प्राप्ति करता है। अभिनय कला के माध्यम से समाज एवं व्यक्ति के चरित्रों का प्रदर्शन ही नाटक है । नाटक गद्य साहित्य का एक भाग है जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्राकृतिक एवं शिक्षा संबंधित विषयों का चित्रण होता है।

मुण्डा जनजाति की भाषा मुण्डारी प्राचीन काल से बोली जा रही है। यह विश्व के प्राचीनतम वंश में से आते हैं। ऐतिहासिकता के आधार पर यह कहा जाता है कि मुण्डा समुदाय की भाषा-संस्कृति और सभ्यता का शुभारंभ मानव उत्पति के साथ हुआ है। मुण्डा भाषा प्राचीन काल से लोगों के कंठ में सुरक्षित है। लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाटक और लोक परम्पराओं से समृद्ध मुण्डा लोक साहित्य एक ऐसा वृहत् ज्ञानकोश है जिसमें इंसानी समाज की विकासयात्रा के बहुआयामी अनुभव संरक्षित है। नेग-दस्तूर, संस्कार, आचार- व्यवहार, धार्मिक विश्वास और सम्पूर्ण जीवन पद्धति का प्रतिबिम्ब मुण्डा लोक साहित्य में मौजूद है। युग परिवर्तन के साथ ही मुण्डाओं का भौगोलिक निवास क्षेत्र परिवर्तित होता गया । बाहय जातियों के साथ भाषायी एवं सांस्कृतिक सम्मिलन हुआ। समय के साथ ही मुण्डाओं का मूल निवास स्थान छोटानागपुर के सुतियाम्बेगढ़ में बना। मदरा मुण्डा सर्वसम्मति से मानकी व राजा बनाये गये। इस समय तक मुण्डारी भाषा अपनी सर्वोत्कृष्ट रूप में यहाँ प्रचलित थी।

मुण्डारी भाषा को लिखित रूप देने का कार्य 1840 ई. के आसपास शुरू हुआ, जब भक्ति काल का दौर चला रहा था। डॉ. रामदयाल मुण्डा लिखते हैं कि 19वीं शताब्दी के प्रथम दशक के आसपास बुधनाथ शिखर का जन्म हुआ था। उनके पिता गौर शिखर तमाड़ राजा के दरबारी गायक थे। बुधनाथ शिखर को गीत-संगीत की विरासत अपने पिता से ही मिली। बुधनाथ ने प्रारंभ में पंचपरगना-बंगला और पंचपरगनियाँ में ही गीत लिखे, किन्तु उन्होंने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ- प्रीतपाला और रामायणपाला मुण्डारी में रचा। वैष्णव धर्म के प्रचार- प्रसार में मुण्डारी भाषा का योगदान बुदु बाबु (बुधनाथ शिखर) और उनके साथियों के गीतों से काफी हुआ।
इसी के आसपास यानी 1844-45 ई. में ईसाई मिशनरियों का आगमन छोटानागपुर में होता है। उन्होंने यहाँ की भाषाओं का अध्ययन किया। जगदीश त्रिगुणायत लिखते हैं- "मुण्डाओं के मनोभावों को समझने के लिए और अधिकतर उनके बीच अपने धार्मिक और बाइबिलकल साहित्य को प्रचारित करने के लिए उन्होंने अपने धर्मग्रंथों का अनुवाद किया है।"

मुण्डारी भाषा का अध्ययन कई विद्वानों ने किया है, जिनमें मैक्समूलर, हडसन, कैम्बेल, रॉबर्ट काष्ट, गियर्सन, स्टेन नो, रिजले, हन्टर, लोगन, काबर्स, फेडरिक

मिलर आदि प्रमुख हैं। मुण्डारी भाषा साहित्य परिमाण में जितना विपुल है, सौंदर्य में भी उतना ही उत्कृष्ट है। मुण्डारी लोक साहित्य जितना उन्नत है, शिष्ट साहित्य का दायरा भी उतना ही व्यापक एंव विकास के पथ पर अग्रसर है। डॉ. अल्फ्रेड नोत्तरोत ने सर्वप्रथम 1871 में 'मुण्डा इतुन सिदा पुथि' नामक किताब छापा था। 1871 ई. से पहले मुण्डारी में प्रकाशित किताबे नहीं मिलते है। डॉ. नोत्तरोत द्वारा रचित अन्य किताबों में मुण्डा इतुन एटअ पुथि, सिदा स्टैन्डर्ड गिनती पुथि, ग्रामेटिक डेर कोल एस्परच, मुण्डारी अनुवादिक बाइबल आदि है। फादर जॉन हॉफमैन ने इन्साइक्लोपीड़िया मुण्डारिका, डब्ल्यू जी. आर्चर ने मुण्डा दुरांड., पी पोनेट ने 'होड़ों होन कोआ कजि जनोको' किताबे लिख कर मुण्डारी साहित्य के आरंभिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिए । मेनस राम ओडेया ने 'मातुराअः कहानि' और 1950 के आसपास भइयाराम मुण्डा ने सोसो बोंगा लिखकर साहित्य के विकास में अहम भूमिका निभाया। जगदीश त्रिगुणायत ने कहानी संग्रह 'मुण्डारी लोक कथा' 1968 ई. और गीत संग्रह 'बाँसुरी बज रही '1970 संपादित कर विकास में अपना भागीदारी निभाया। काशीनाथ सिंह मुण्डा 'काण्डे' ने अपना गीत रचना 'संसबा' 1972 और 'गुइराम' उपन्यास 1980 में प्रकाशित कर साहित्य और समाज को रसिकता से भर दिया। भाषावैज्ञानिक डॉ. रामदयाल मुण्डा ने मुण्डारी साहित्य को दृढ़ आधार देने में अग्रणी भूमिका निभाया। डॉ. रामदयाल मुण्डा ने 'हिसिर' मुण्डारी गीतों का संग्रह तथा 'सेलेद' मुण्डारी, नागपुरी, हिन्दी कविताएं 1967 में सम्पादन किए । इन्होंने बुदू बाबु के गीतों का संग्रह कर प्रीतपाला एंव रामायणपाला' पुस्तक 1978 और 'एआ नावा कनिको' 1980 में प्रकाशित कर समाज में नई जागरण का संचार किया। राम मुण्डा, कुंजलसाय मीरु, मेनस राम ओडेया, भइयाराम मुण्डा, काशीनाथ सिंह मुण्डा, दुलायचंद्र मुण्डा, निकोदिम केरकेट्टा, मानमसिह मुंडू, डॉ. रामदयाल मुण्डा, डॉ. मनसिद्ध बड्ड़यउद, डॉ० सिकरादास तिर्की और डॉ. बीरेंद्र कुमार सोय आदि का साहित्य के विकास में विशिष्ट योगदान रहा है। इन सभी साहित्यकारों ने मुण्डारी साहित्य-सांस्कृतिक विरासत के विकास, संरक्षण और समस्त आदिवासी गौरव को स्थापित करने में अपना बहुमूल्य योगदान दिए।

मुण्डारी शिष्ट साहित्य के अंतर्गत मुण्डारी नाट्य साहित्य का अपना संसार है। मुण्डारी नाट्य साहित्य की लेखन परंपरा की शुरुआत डॉ. एस. ए. बी. डी हंस ने 'होड़ो सासांकिर बम्बरू' 1973 में लिखकर की। डॉ. रामदयाल मुंडा, नलिनी नाग, अमिता मुण्डा ने 'मुण्डारी पाठ' 1981 में, डॉ. सिकरादास तिर्की एंव अमिता मुण्डा

ने 'मरड. गोमके जयपाल सिंह मुण्डा', मंगल सिंह मुण्डा ने 'कमीनाला' 2013 में एंव 'कॉलेज गेट' 2015 में, डॉ. गिरिधारी राम गौंझ ने 'महाराजा मदरा मुण्डा' जोवाकिम तोपनो ने 'डीड़गर इपिल' नाटक लिख कर नाट्य साहित्य के विकास कर मुण्डारी भाषा साहित्य को एक नई स्वरूप दी है।
मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मुण्डारी नाटक में मनुष्य जीवन के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं प्राकृतिक जीवन के दर्शन मिलते हैं। इसमें समाज से जुड़े रीति- रिवाज एवं विश्वास के दर्शन मिलते हैं। नाटक का मुण्डारी साहित्य से घनिष्ठ संबंध है। नाटक में साहित्य की विभिन्न विधाएं जैसे- मुहावरे, लोकोक्तियाँ, लोकगीतों आदि का समावेश होता है, जिसे नाटक का रूप और भाव अत्यंत सुंदर हो जाता है।
नाट्य साहित्य से उत्पन्न होने वाला जागरूकता और विचारशीलता समाज को सकारात्मक दिशा में ले जाती है। नाटक दृश्य काव्य के अंतर्गत आता है, जो रंगमंच का विषय है। नाटक को रंगमंचों में अभिनय किया जाता है जिसे मनुष्य देखकर अपने अंदर मानवीय गुणों का समावेश करता है। नाटक अपने रंगमंच से जुडने अर्थात उसका माध्यम होने के कारण सबसे अधिक जीवन का अनुकरण करता है। रंगमंच नाटक को जीवंतता प्रदान कर उसे अन्य साहित्यिक विधाओं से बहुत ऊंचा उठा देता है। नाटक रंगमंच पर प्रस्तुत होने के पश्चात ही अपने पूर्ण स्वरूप को प्राप्त करता है। नाटक में सामाजिकता होती है। यह एक सामूहिक कर्म है। अन्य साहित्यिक विद्याओं की भाँती यह केवल स्व के लिए नहीं रची जाती है, क्योंकि नाट्य प्रस्तुति एक लोक सम्प्रेषण का माध्यम है, स्वयं सम्प्रेषण का नहीं। नाटक समाज और संस्कृति की गतिशील प्रक्रियाओं का आकलन व चित्रण है। इस प्रकार समाज और संस्कृति के परिवर्तन में नाट्य साहित्य की अहम भूमिका रही है।

शोध का महत्व एवं सामाजिक उपयोगिता :-

नाट्य साहित्य, मानव समाज को सृष्टि और सांस्कृतिक विकास का साक्षात्कार कराने का एक शक्तिशाली माध्यम है। यह न केवल कला और सृजन बल्कि सामाजिक परिवर्तन और मनोबल को प्रेरित करने का कारण भी है। नाट्य साहित्य का सामाजिक प्रभाव व्यापक है। और इसके कई पहलुओं में होता है। पहली बात, नाट्य साहित्य से उत्पन्न होने वाला जागरूकता और विचारशीलता समाज को सकारात्मक दिशा में परिवर्तित करती है। नाटकों के माध्यम से लोग समाज में हो

रहे गतिविधियों और चुनौतियों को गहराई से समझते हैं, और उन पर विचार करते हैं। नाटक के प्रमुख उद्देश्यों में से एक लोगों को मनोरंजन प्रदान करना भी है। नाटक के विविध रूप जैसे कॉमेडी, ट्रेजेडी, म्यूजिकल आदि लोगो के मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। यही नहीं बल्कि सामाजिक न्याय, अधिकार, सांस्कृतिक संरक्षण, संवेदनशीलता एंव सहानुभूति विकसित करने और समाजिक समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने में सहारा प्रदान करता है तथा नाटकिय विचारों के माध्यम से लोग समाज में हो रहे अन्याय, जातिवाद और भेदभाव को चुनौती देने के लिए प्रेरित होते हैं।

<u>शोध कार्य की प्रेरणा :-</u>

मेरा जन्म झारखण्ड राज्य के राँची जिले के आदिवासी बहुल गाँव कोड़दा टोला डौकोचा में हुआ। मुण्डारी भाषा भासी प्रमुख क्षेत्र में मेरा जन्म होने के कारण मेरी मातृभाषा मुण्डारी है, जिसे मैं बोलता हूँ, सुनता हूँ और समझता हूँ। इसी जनसमुदाय के इर्द गिर्द ही मैंने अपने वल्यपन से किशोरावस्था तक के समय को व्यतीत किया हूँ, अतः मुण्डारी भाषा के मौलिकता को भली भांति जनता हूँ। मेरी प्राथमिक शिक्षा गाँव के स्कूल से हुई। मैट्रिक, इन्टर एंव स्नातक की पढ़ाई मेरी गाँव के सामने छोटे से शहर बुण्डू से पूर्ण की। इसी पढ़ाई के क्रम में स्नातकोत्तर मुण्डारी भाषा साहित्य में पूर्ण की। मैं साहित्य का छात्र होने के कारण साहित्य के सभी विद्याओं काव्य, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि में मेरी रुचि स्वाभाविक है, पर सभी विद्याओं में से किसी एक के चयन का प्रश्न जब भी उपस्थित हुआ है, तब मैं आपना स्वाभाविक रुचि के अनुसार नाटक विद्या को ही अधिक पसंद करता हूँ। स्नातकोत्तर पढ़ाई के काल में मुण्डारी भाषा साहित्य के अंतर्गत मुण्डारी नाट्य साहित्य के बारे में पढ़ा जो मेरी रुचि के कारण नाट्य साहित्य को ओर गहराई से जानने का जिज्ञासा मेरी मान में बढ़ती गयी । इसके बाद मैंने मुण्डारी भाषा साहित्य का गहन अध्ययन कर इसके विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया। नाट्य साहित्य में मेरा रुचि बचपन से ही था। नाटक के अभिनय को सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों, एतिहासिक और साहित्यिक कथाओं के रूप में बचपन से देखते आया हूँ। ऐसे में मेरे गुरुजनों ने भी मेरी रुचि के कारण मुण्डारी नाट्य साहित्य में शोध करने के लिए प्रेरित किया ताकि मुण्डारी भाषा साहित्य के विकास में नाट्य साहित्य की योगदान को प्रदर्शित किया जा सके ।

<u>परिकल्पना :-</u>

यह शोध कार्य समस्त मानव समाज के लिए मूल्यवान साबित होगा। इससे भाषा साहित्य, संस्कृति के प्रति अभिरूचि एवं प्रेमभाव बढ़ेगा। मुण्डारी साहित्य में अनेक शोध अध्ययन एवं अनुसंधान के कार्य हो चुके है, और अभी भी चल रहे है परन्तु '**मुण्डारी नाट्य साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन**' पर किसी ने अभि तक शोध कार्य नहीं किये है। अतः नाट्य साहिति पर गहन अध्ययन कर उनके विभिन्न पक्षों को जानने और समझने का प्रयास किया जायेगा।

<u>शोध का उद्देश्य :-</u>

1. मुण्डारी नाट्य साहित्य का उद्भव एंव विकास का अध्ययन प्रस्तुत करना ।
2. मुण्डारी नाट्य साहित्य को आम जनमानस के पटल में लाना।
3. मुण्डारी भाषा साहित्य के माध्यम से मुण्डा जनजाति के गौरवशाली इतिहास पर प्रकाश डालना।
4. मुण्डारी नाटक के माध्यम से मुण्डा परम्पराओं, समाजों, भाषाओं और संस्कृतियों से अवगत होना।
5. मुण्डारी नाटकों में चित्रित सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक प्रभाव का अध्ययन प्रस्तुत करना
6. झारखण्ड राज्य निर्माण के इतिहास को नाटकों के माध्यम से प्रस्तुत करना।
7. नाट्य साहित्य के प्रति अभिरुचि जागृत करना ।
8. मुण्डारी नाटकों में छुपे सामाजिक संदेशों को समाज के सामने लाना।
9. मुण्डारी भाषा, साहित्य और समाज को समझने में लोगों को मदद करना तथा मुण्डारी साहित्य को सुदृढ़ करना।

<u>शोध विधि :-</u>

1. विश्लेषणात्मक विधि
2. साक्षात्कार विधि
3. तुलनात्मक विधि
4. आलोचात्मक विधि
5. वर्णनात्मक विधि
6. अवलोकन विधि

<u>शोध सहायक उपकरण</u>

शोध कार्य के दौरान निम्नलिखित उपकरण उपयोग में लिए जा सकते है -

1. शोध विषय से संबधित आधार ग्रंथ, सहायक पुस्तकें
2. पत्र-पत्रिका जागर साड़ा, सरना सकम, संगोम आदि
3. कंप्युटर, लैपटॉप, मोबाईल, टेप रिकॉर्डर
4. पुस्तकालय
5. रेडियो
6. इंटरनेट का प्रयोग

प्रस्तुत विषय की नवीनता :-

इस विषय में शोध कार्य पहले नहीं किया गया है। मुण्डारी भाषा साहित्य में अब तक जितने भी छोटे बड़े नाटक लिखे गए है, उन सभी के विषय लिखित और कुछ मौखिक रूप में है। मुण्डारी नाटकों को एक मंच प्रदान करना आवश्यक है, ताकि आदि काल से चली आ रही नाटकों के विशिष्ट संसार को संरक्षित कर उससे जुड़े तमाम साहित्य को बचाया जा सके। इस शोध से युवाओं में नाटक के प्रति लोकप्रियता को बढ़ाना लक्ष्य है, ताकि नाटक के प्रति अभिरुचि, समझदारी एंव निष्ठा भाव का विकास किया जा सके। शोध के लिए यह प्रेरक एंव नवीन कार्य होगा।

अध्याय प्रारूप

मुण्डारी नाट्य साहित्य : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

- प्रस्तावना
- शोध की महत्व एंव सामाजिक उपयोगिता
- शोध कार्य की प्रेरणा
- परिकल्पना
- शोध का उद्देश्य
- शोध विधि
- प्रस्तुत विषय की नवीनता

प्रथम अध्याय : नाटक का सामान्य परिचय

1. नाट्य शब्द का अर्थ
2. नाट्य साहित्य का उद्भव

(क) उद्भव संबंधित भारतीय मत
(ख) उद्भव संबंधित पाश्चात्य मत

3. नाटक की परिभाषा एंव विकास
4. नाटक के तत्वों का विवेचन
5. नाटक का वर्गीकरण

द्वितीय अध्याय : मुण्डारी नाट्य साहित्य का उद्भव एवं विकास

1. मुण्डारी साहित्य का सामान्य परिचय
2. मुण्डारी नाटक का उद्भव एंव विकास
3. लोक - नाटक तथा मुण्डारी नाटक परंपरा
4. मुण्डारी नाटकों की विशेषताएं

तृतीय अध्याय : मुण्डारी नाटकों के रचनाकार एवं उनके नाटक

1. रचनाकारों का परिचय
2. मुण्डारी नाट्य लेखन
3. मुण्डारी नाटकों में पात्र एंव संवाद योजना

चतुर्थ अध्याय : मुण्डारी नाटकों में रंगमंच

1. रंगमंच
   (क) पाश्चात्य रंगमंच का उद्भव, अवधारना एंव विकास
   (ख) भारतीय रंगमंच का उद्भव, अवधारना एंव विकास
2. रंगमंच और नाटक का संबध
3. अभिनय नाटक एंव अभिनेयता के लक्षण
4. मुण्डारी नाटकों में रंगमंच

पंचम अध्याय: मुण्डारी नाटकों में शिल्प सौंदर्य

1. भाषा
2. शैली
3. रस
4. मुहावरे
5. लोकोक्तियाँ

6. बोलचाल के शब्द

षष्ठम अध्याय : मुण्डारी नाटक में जनजीवन

1. पारिवारिक
2. सामाजिक
3. राजनीतिक
4. आर्थिक
5. धार्मिक
6. सांस्कृतिक

सप्तम अध्याय : मुण्डारी नाटक में आधुनिकता

1. सामाजिक एकता
2. नारी जागरण
3. राष्ट्रीय जागरण
4. प्रेम का स्वरूप
5. प्रजातंत्र का स्वरूप

उपसंहार

मूल्यांकन एंव निष्कर्ष

परिशिष्ट

- साक्षात्कार विवरण
- आधार ग्रंथ सूची
- सहायक ग्रंथ सूची
- पत्र - पत्रिकाओं की सूची
- चित्रावली

नोट :- शोध प्रबंध में आंशिक फेरबदल संभावित है।

शोध निर्देशक शोधार्थी

डॉ. जुरन सिंह मानकी
सहायक प्राध्यापक, मुण्डारी विभाग
एस. एस. मेमोरियल कॉलेज, राँची
राँची विश्वविद्यालय, राँची

सोमा महतो
(यूजीसी) नेट/जे.आर.एफ. उत्तीर्ण
स्नातकोत्तर मुण्डारी विभाग
डी. एस. पी. एम. यू. राँची

आधार ग्रंथ

1. अहीर, डॉ. करमचन्द, पंचपरगनिया गीत वदना कविता, पंचपरगनिया भाषा विकास केन्द्रीय समिति, बुण्डू, 2002 ई
2. अहमद, डॉ. खालिक, नागपुरी भाषा में मुस्लिम साहित्यकारों का योगदान, 2005 ई0
3. उपाध्याय, श्री कृष्णदेव, लोक साहित्य की पहचान, इलाहाबाद, 1997
4. उपाध्याय, श्री कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, इलाहाबाद, 1964
5. कपूर, गुरुप्रसाद, हिन्दी नाटक की रूपरेखा, हिन्दी साहित्य संसार, दिल्ली
6. केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद, नागपुरी भाषा और साहित्य, रांची, 1971
7. केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद, साहित्य तत्व और आयाम, प्रकाशन झारखण्ड झरोखा रांची, चतुर्थ संस्करण
8. केशरी, डॉ. विसेश्वर प्रसाद, नागपुरी गीतों में श्रृंगार रस, किशोर विद्या निकेतन, भदैनी, वाराणसी, 1994
9. गायकवाड़, ज्ञानराज काशीनाथ, आधुनिक नाटकों में संघर्ष तत्व, पुस्तक संस्थान, कानपुर
10. गौंझू, गिरिराज, डॉ. गिरिधारी राम, महाराजा मदरा मुण्डा, झारखण्ड झरोखा, रातू रोड, राँची, झारखण्ड, द्वितीय संस्करण 2018
11. तिर्की, डॉ. सिकरादास, मुण्डा, प्रो. अमिता, झारखण्ड रेन जीद कोड़ाहोन मरड, गोमके जयपाल सिंह मुण्डा नाटक, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन चेशायर होम रोड, बरियातू, राँची
12. तिर्की, डॉ. सिकरादास, मुण्डारी लोक साहित्य में इतिहास, प्यारा केरकेट्टा फाण्डेशन, बरियातु, रांची, 2010

13. बड्यउद, डॉ. मनसिह, होडो जगर गाअइदि-गमुइदि जमा, कांथलिक प्रेस, रांची, 2011
14. मुण्डा, मंगल सिंह, कमीनाला, झारखण्ड झरोखा, 2013
15. मुण्डा, डॉ. रामदयाल, नाग नलिनी और मुण्डा अमिता, मुण्डारी पाठ, प्रथम संस्करण 1981 सरस्वती प्रेस उदयपुर, राजस्थान रूम्बुल दिरि-ओड़ा, सरनाटोली, हातमा, रांची कॉलेज के पीछे रांची, झारखण्ड, द्वितीय संस्करण, 2013
16. सिंह, डॉ० उमाशंकर, हिन्दी के समस्या नाटक, ऊर्जा प्रकाशन, इलाहबाद
17. सिंह, उपेन्द्र नारायण, आधुनिक हिन्दी नाटकों पर नाटकों का प्रभाव
18. सोय, डॉ. बीरेंद्र कुमार, मुण्डारी जागर ओड़ो साहिति रेआ उबर, प्रगतिशील प्रकाशन, 2019
19. हंस, डॉ. एस. ए. बी. डी., होड़ो ससंकीर बम्बरू, 1973

<u>सहायक ग्रंथ</u>

1. तोपनो, सेम, कुर्सीनामा : मुँड़ाओ का निर्जतीय इतिहास, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, ज्वारलाल नेहरू मार्ग, कोलकता, प्रथम संस्करण, 1982
2. मुण्डा, भइया राम, दाडा जमाकन कहानिकों, भइया राम मुण्डा, फांउडेशन निवरपुर रांची, 2011
3. मुंडू, मानमासिह, कुदुम ओड़ो सोलोको, काथलिक प्रेस, रांची, 2006
4. मुण्डा, डॉ. रामदयाल, सेलेद, (विविध), सहकारी प्रकाशन समिति, मोराहाबादी रांची बिहार, प्रथम संस्करण, 1967
5. मुण्डा, डॉ. रामदयाल, मुण्डारी-व्याकरण, छोटानागपुर प्रकाशन केन्द्र, श्रद्धानन्द रोड, रांची. द्वितीय संस्करण, 1988
6. लाल, डॉ कन्हैया, साहित्य-संदेश, अगस्त, 1968
7. प्रसाद, स्वर्णलता, हिन्दी-मुण्डारी शब्दकोश, बिहार जनजातीय कल्याण एंव शोध संस्थान, राँची, प्रथम संस्करण 1976
8. त्रिगुणायत, जगदीश, मुण्डा लोककथाएँ, अधीक्षक सचिवालय शाखा मुन्द्रणालय, बिहार, रांची, 1968
9. त्रिगुणायत, जगदीश, सोसो बोंगा शिक्षक सहयोग मंडार, रांची, 1960

<u>पत्र-पत्रिकाओं की सूची</u>

1. जागर साडा (मासिक पत्रिका), सुशील कुमार बगे, 15 अक्टूबर 1950
2. आदिवासी, बिहार सरकार, राँची, फरवरी 1947
3. सरना सकम (मासिक पत्रिका), भइयाराम मुण्डा, 1960
4. सम्पाडातिंग (मासिक पत्रिका), एस. ए. बी. डी. हँस, जून, 1969
5. मारसल (मासिक पत्रिका), निरल एनेम होरो, राँची, सितंबर 1993
6. सेड़ा सेतेड. (तिमाही पत्रिका), नवीन मुंडू, राँची, 1999
7. उलगुलान (तिमाही पत्रिका), सत्यनारायण मुण्डा, कैलाश प्रेस राँची, जनवरी 2003
8. बा गनालड़ (वार्षिक पत्रिका), डॉ भुनेश्वर अनुज, डॉ. रामदयाल मुण्डा, वंदना टेटे, भइयाराम मुण्डा फाउंडेशन निवारण आश्रम निवारपुर राँची, नौवल्टी आर्ट प्रेस राँची
9. संगोम (तिमाही साहित्यिक पत्रिका), डॉ. बीरेंद्र कुमार सोय, 2010